साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 56, मार्च(प्रथम) , 2019

# संत कबीर साहब की वाणी

डॉ गुलाब चंद पटेल

संत कबीर हमे आध्यात्मिकता का अर्थ समझा रहे हैं, जो अपन आध्यात्मिकता को एक शब्द में बोलना चाहे तो वो हे "गुरु" वो शब्द है "मुर्शीद" या जिसे हम अंग्रेजी में मास्टर कहते हैं, आध्यात्मिकता की दो विचार धारा हे, एक स्कूल कहती हैं कि, किसी ने प्रभु को उनकी सच्ची स्थिति में देखा नहीं है, और न इन्हे सच्ची अवस्था में देखा देखा जा सकता है।

दूसरी स्कूल की विचार धारा कहती हैं कि, "नानक का पाती साहू दीसे जाहिरा" की प्रभु को हाजरा हजूर देखो, एक सूफी संत ने कहा है कि, प्रभु को हाजरा हजूर देखा है और इंसान के रूप में देखा हे, कुछ महात्मा ऑ ने तो बहुत सुंदर तरीके से सच्चाई पेस की है, लेकिन जब भक्ति की बात आती है तो संत महात्मा खुद की बात बताते हैं, क्राइस्ट ने भी कहा हे कि, प्रभु को नजर के सामने देखो।

कबीर बताते हैं कि, गुरु जब शरीर रूप में होते हैं तो हमे नाम दान की संपत्ति देते हैं और हमे ज्योति और श्रुति का अनुभव कराटे हे, इस लिए हमे देह अभ्यास से ऊपर उठना चाहिए, दिल में चाँद, तारे और सूर्य की रोशनी से प्रभु के दिव्य स्वरूप का दर्शन करना होगा ये दिव्य स्वरूप को हम गुरुदेव के नाम से बुलाते हैं, ये स्वरूप में इतना आकर्षण होता है कि, हम इसमे लीन हो जाते हैं, फिर धीरे धीरे गुरुदेव हमे सूक्ष्म और कारण देशओमेसे पसार कराते महा चेतना के देश में ले जाते हैं, और हमे त्रि गुणअतित कर देते हैं, वो सच में अमरुत धारा हे, हमारी आत्मा वो अमरुत मे स्नान करते हैं जब वो अमरुत पीते हैं तो आत्मा के सभी अवगुण निकल जाते हैं, और पचीस प्रकृति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान और माया रूपी तमाम तरह के पर्दे खुल जाते हैं, ये देश में हम सभी

उन्हे सद्गुरु के नाम से पुकारते हैं, गुरुवाणी मे गुरु शब्द स्वरूप बन जाते हैं, गुरु नानक भी कहते हैं कि, गुरु शब्द रूपी हे, यही बात कबीर साहब भी कहते हैं, ये मार्ग पर चलके हम शब्द रूपी स्वरूप गुरु को पा सकते हैं, उसके बाद गुरु हमे हमारी आत्मा को आध्यात्मिक मंडल मे ले जाते हैं, और हमे खुद मे लीन कर देते हैं।

"गुरु गोविंद दौनो खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपकी, जिन गोविंद दियो बताय "

ये तो मान देने की बात है, प्रभु जी तो सबसे ऊंचे स्थान पर है, लेकिन इंसान तो वही बोलता है कि जो उसने देखा है, संतो द्वारा खुद की बात की गई है, सहजो बाई ने ये बात इस तरह पेश की है कि, प्रभु हमे चो राशि लाख योनि में डाल दिया है, जबसे हमने जन्म लिया तबसे चो रासी लाख योनि में घूम रहे हैं, अभी तक परमात्मा के साथ मिलन नहीं हुआ है और हकीकत में आत्म और परमात्मा हमारे जीवन में का लक्ष्य है, ये सद्गुरी की दया ही है जो हमे चो राशि योनि के चक्कर में से हमे बचाकर हमारी आत्मा को परमात्मा के साथ भेट कराते हैं, इस लिए गुरु को मे सबसे पहले नमस्कार करती हू, प्रभु ने पांच डाकू हमारी पीछे लगा दिए गए हैं, काम, क्रोध, मोह, माया और अभिमान हमारे अंदर बहते अमरुत रस को वो डाकू पी जा रहे हैं।

कबीर कहते हैं कि गुरु के समान ओर कोई दानी नहीं है, कबीर साहब हमे समझा रहे हैं कि समय के महात्मा स्वयं शास्वत होते हैं, अमर होते हैं, और हमे भी नाम दान देकर अमर बना देते हैं, सदा के लिए जीवन दे देते हैं, सद्गुरु हमे खुद का जीवन दान देते हैं, वो हमे उनकी खुद की दया देते हैं पूर्ण सद्गुरु हमे ग्यान का दान देते हैं, गुरु ने हमारे काम, क्रोध, मोह, लोभ और अभिमान को नाथ लेते हैं

कबीर जी बता रहे हैं कि, हमे जल्द से जल्द अपनी जो बात कहना चाहते हैं वो बात कर देना चाहिए, समय बहुत तेजी से आगे निकल रहा है, और समय और लहर कभी किसी की राह नहीं देखता, कबीर बताते हैं कि ये जिंदगी का कोई

भरोसा नहीं है, इस के बारे में एक कवि ने कहा है कि, एक प्रिय तमा को बहुत लोग चाहने वाले थे,एक प्रेमी एक बार प्रिय तमा के पास आया और कहा कि, तू तो मेरी जान हे, तब प्रिय तमा बहूत खुश हो गई, फिर दूसरा प्रेमी आया और उसने कहा कि, मे तुम्हें बहुत चाहता हूं, तब प्रेमिका ने कहा कि, पहले प्रेमी ने तो एसा कहा था कि मे उसकी जान हू, उस पर एक दूसरा आशिक ने थोड़ा हास्य किया, और कहा कि, देह का क्या भरोसा है, अभी मे आपके साथ बात कर रहे हैं और क्या पता मेरी जिह्वा बंद हो जाय, जीवन अनमोल है, जीवन की हर क्षण हर घड़ी बहूत अमूल्य है।

कबीर जी कहते हैं कि, जबसे ये संसार बना हे, तबसे हमारी आत्मा परमात्मा से अलग हो गई है, और चौरासी लाख योनियों में फेरे ले रही है, महा पुरुष प्रभु के रूप में होते हैं और वो प्रभु जी के पास से आध्यात्मिकता का खजाना ले आते हैं, फिर तड़पति आत्मा को वापस ले जाकर प्रभु के साथ मिला देते हैं, गुरु हमे उनके चरणों में ले जाकर हमारा आलस, दाग दूर करते हैं, हमे नाम दान देते हैं, हमे गुरुमुख बनाते हैं, हमे प्रभु प्राप्ति के लिए मार्ग बताते हैं, हमारे में प्रकाश डालते हैं  और इस प्रकाश से हमारा जीवन उन्नत बनाते हैं।

कबीर साहब हमे समझाते हैं कि, हमे हर समय अभ्यास करना चाहिए, और प्रभु का स्मरण करना चाहिए, अभ्यास वो हे कि प्रभु का स्मरण करते हुए प्रभु मे लिन होकर उसका ध्यान धरना चाहिए, इसी बात के साथ हम ऎसे पवित्र संत कबीर साहब के चरणों में वंदन करते हैं!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें